Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

ISA

यशायाह 1:1–31, यशायाह 2:1–5:30, यशायाह 6:1–8:18, यशायाह 8:19–12:6, यशायाह 13:1–23:18, यशायाह 24:1–27:13, यशायाह 28:1–39:8, यशायाह 40:1–48:22, यशायाह 49:1–53:12, यशायाह 54:1–66:24

यशायाह 1:1–31

यशायाह ने परमेश्वर से कई संदेश दक्षिणी राज्य के लोगों और अगुओ को दिए। न्याय के संदेश अध्याय 1 में दर्ज हैं। ये न्याय संदेशों के उदाहरण हैं जो पुस्तक में बार-बार दर्ज हैं। यशायाह के न्याय के संदेश बताते हैं कि लोगों का न्याय कैसे और क्यों किया जाएगा। अध्याय 1 के संदेश दक्षिणी राज्य के लोगों और अगुओ के बारे में थे। जो अपने पाप के लिए पश्चाताप करेंगे, वे नष्ट होने से बच जाएंगे। जो पाप करना बंद नहीं करेंगे, वे नष्ट हो जाएंगे। उन्हें सीनै पहाड़ की वाचा के प्रति वफादार न होने के लिए दंडित किया जाएगा। दक्षिणी राज्य के लोग और प्रधान केवल परमेश्वर की आराधना नहीं करते थे। वे बेईमानी से अमीर बन गए थे। उन्होंने जरूरतमंद लोगों के साथ बुरा व्यवहार किया। उन्होंने सही और न्यायपूर्ण काम नहीं किया। और उन्होंने परमेश्वर पर भरोसा नहीं किया कि वे उन्हें हमलावर दुश्मनों से बचाएंगे। इस कारण परमेश्वर ने वाचा के श्राप को उन पर आने दिया। अध्याय 1 में परमेश्वर ने अपने लोगों (परमेश्वर के लोग) का कई तरीकों से वर्णन किया। उन्होंने उन्हें सदोम और गमोरा, आज्ञा न मानने वाले बच्चे और एक वेश्या कहा। ये तरीके दिखाते हैं कि कैसे परमेश्वर के लोग उनके प्रति वफादार नहीं थे। वे याजकों का राज्य और एक पवित्र राष्ट्र के रूप में नहीं जी रहे थे। परमेश्वर अपने लोगों को क्षमा करना और उन्हें आशीष देना चाहते थे। लेकिन उन्हें बदलने और उनकी आज्ञा का पालन करने के लिए तैयार होना था।

यशायाह 2:1–5:30

इन अध्यायों में और भी न्याय के वचन हैं। इनमें भविष्य के लिए आशा के वचन भी शामिल हैं। ये आशा के वचनों के उदाहरण हैं जो पूरी पुस्तक में बार-बार दर्ज किए गए हैं। यशायाह के आशा के वचनों में बताया गया कि परमेश्वर कैसे आशीष देंगे। परमेश्वर दक्षिणी राज्य के लोगों और अगुवों को आशीष देंगे। और परमेश्वर पृथ्वी पर सभी राष्ट्रों को आशीष देने के लिए उनका प्रयोग करेंगे। अध्याय 2 में, यशायाह का दर्शन अंतिम दिनों में एक ऊँचे पहाड़ के बारे में है। अंतिम दिन भविष्य के समय के बारे में बात करने का एक तरीका था। आशीष का समय तब आएगा जब सिय्योन पहाड़ ऊँचा उठाया जाएगा। सिय्योन पहाड़ वह पहाड़ था जहाँ मंदिर बनाया गया था। मंदिर के ऊपर उठाए जाने के बारे में बात करना किसी चीज़ का वर्णन करने का एक तरीका था। यह उस समय का वर्णन करता था जब परमेश्वर को एकमात्र सच्चे परमेश्वर के रूप में सम्मानित किया जाएगा। पृथ्वी पर सभी लोग यह स्वीकार करेंगे कि परमेश्वर ही एकमात्र सच्चा परमेश्वर है। वे उसका आदर करेंगे। इसीलिए दर्शन में हर देश के लोग पहाड़ पर जाते हैं। वे यरूशलेम पर हमला करने या मंदिर को नष्ट करने नहीं जाते। इस दर्शन में फिर कभी युद्ध नहीं होगा। इसके बजाय, सभी राष्ट्र यह सीखने जाते है कि परमेश्वर उनसे क्या चाहते है कि वो कैसे जिए। फिर वे परमेश्वर की आज्ञा मानते हैं और उसी तरह जीते हैं जैसा उन्होंने उन्हें सिखाया है। यह उन सभी लोगों की तस्वीर है जिन्हें परमेश्वर के साथ सही ठहराया गया है। इसे धर्मी बनाया जाना भी कहा जाता है। सभी राष्ट्रों के लोग उसी तरह से जीवन जिएँगे जिस तरह से परमेश्वर हमेशा से चाहते थे कि मनुष्य जिएँ। इसी तरह से परमेश्वर सभी राष्ट्रों को आशीष देने के लिए याकूब की वंशावली का उपयोग करेंगे। इस वचन के माध्यम से यशायाह ने याकूब के वंश को परमेश्वर के तरीकों के अनुसार जीने के लिए आमंत्रित किया। यह वचन उस समय के बारे में था जब परमेश्वर अपने लोगों को स्वच्छ और पवित्र बनाएंगे। वह बुरे काम करने वालों का न्याय करेंगे। और उनके पापों को धो देंगे। यह दिखाता है कि परमेश्वर ने उनके पापों को माफ़ कर दिया। इससे परमेश्वर के लोगों को फिर से उनकी उपस्थिति में रहने की अनुमति मिलेगी। जब इस्राएली (इस्राएल) मिस्र से निकले, तो परमेश्वर उनके साथ बादल और आग के खंभों में मौजूद थे। उन्होंने उन तरीकों से फिर से उनके साथ रहने का वादा किया। उनकी महिमा उन्हें बचाने के लिए एक आवरण की तरह होगी।

यशायाह 6:1–8:18

यशायाह को परमेश्वर ने विशेष रूप से चुना था। यह अध्याय 6 की कहानी से स्पष्ट है। यशायाह मंदिर में था लेकिन अपने आस-पास जो कुछ था उससे कहीं अधिक देख पा रहा था।

उसे स्वर्गीय दुनिया की चीज़ें देखने की इजाज़त थी। एक दर्शन में उसने परमेश्वर को राजा के रूप में शासन करते देखा। यशायाह ने पहचाना कि परमेश्वर कितना पवित्र है। इससे उसे यह एहसास हुआ कि वह और उसके लोग पाप से कितने भरे हुए थे। परमेश्वर ने यशायाह को इस्राएल के लोगों और प्रधानों को संदेश देने के लिए भेजा। यशायाह ने इन संदेशों को बार-बार कई अलग-अलग तरीकों से साझा किया। उसने राजा आहाज से बात करते समय इन्हें ज़ोर से बोला। प्रधानों और लोगों को उन्होंने कविताओं और गीतों के जरिए बताया। उसने उन्हें सभी को देखने के लिए बड़े कागज के टुकड़ों पर लिखा। उसने इन्हें उन पुस्तकों पर भी लिखा जिन्हें उसने मुहरों से बंद करके अपने अनुयायियों को दिया। कुछ संदेश उन्होंने भविष्यवाणी की क्रिया के माध्यम से साझा किए। इसका एक उदाहरण यह था कि उसने एक पुत्र को जन्म दिया और उसे वह नाम दिया जो परमेश्वर ने आदेश दिया था। यशायाह ने अकेले ही भविष्यवक्ता के रूप में सेवा नहीं की। उनकी पत्नी भी भविष्यवक्ता थीं और उनके बच्चे उनके काम का एक महत्वपूर्ण हिस्सा थे। यशायाह ने जो संदेश बोले वे सत्य थे क्योंकि वे परमेश्वर की ओर से थे। यह तब स्पष्ट हो गया जब उसने जो बातें घोषित कीं, वे बाद में हुईं। इसका एक उदाहरण यह था जब यशायाह ने आहाज को इम्मानुएल नामक एक पुत्र के बारे में भविष्यवाणी की थी। यह पुत्र आहाज के लिए एक संकेत था कि परमेश्वर दक्षिणी राज्य को बचाएगा। परमेश्वर उन्हें एराम और उत्तरी राज्य की सेनाओं से बचाएगा। इसके बारे में कहानी 2 राजा 16:5–9 में दर्ज है। कई सालों बाद मत्ती ने यशायाह की इम्मानुएल के बारे में भविष्यवाणी के बारे में कुछ समझा। यह यीशु के बारे में भविष्यवाणी थी (मत्ती 1:22–23)।

यशायाह 8:19–12:6

इन अध्यायों में न्याय के संदेश याकूब के लोगों और अश्शूर के खिलाफ हैं। याकूब के लोगों में उत्तरी राज्य शामिल था। उत्तरी राज्य को इस्राएल और एप्रैम भी कहा जाता था। याकूब के लोगों में दक्षिणी राज्य भी शामिल था। दक्षिणी राज्य को यहूदा भी कहा जाता था। परमेश्वर अपने लोगों से बहुत क्रोधित थे क्योंकि वे अभिमानी थे। भविष्यद्वक्ताओं, न्यायियों और राजाओं ने अगुवों के लिए परमेश्वर के निर्देशों का पालन नहीं किया। ये निर्देश व्यवस्थाविवरण 13:1–5 और व्यवस्थाविवरण 17:8–20 में दर्ज थे। प्रधानों ने ऐसे कानून बनाए जो अनुचित थे और उन्होंने लोगों के अधिकार छीन लिए। परमेश्वर ने अपने लोगों के विरुद्ध न्याय करने के लिए अश्शूर की सेना को औजार के रूप में उपयोग किया। इस तरह अश्शूर वह युद्ध-लाठी थी जिसने परमेश्वर का क्रोध प्रकट किया। लेकिन अश्शूर के राजा यह नहीं पहचान पाए कि उन्हें युद्धों में सफलता इसलिए मिली क्योंकि परमेश्वर ने उन्हें ऐसा करने दिया था। वह घमंडी था। उसने दावा किया कि उसकी अपनी शक्ति और ताकत ने उसे सफल बनाया है। इसलिए परमेश्वर अश्शूर के खिलाफ भी न्याय लाएगा। इन अध्यायों में आशा के संदेश एक शासक और राजा के बारे में हैं जो घमंडी नहीं था। अध्याय 9 में, यशायाह ने भविष्यवाणी की कि दाऊद के वंश में से एक संतान उत्पन्न होगी। यह संतान एक ऐसा शासक बनेगा जो न्याय और सही कार्य करेगा। उसका शासन हमेशा के लिए रहेगा। उसे अद्भुत सलाहकार और सामर्थशाली परमेश्वर कहा जाएगा। उसे अनंतकाल तक जीवित रहने वाला पिता और शांति लाने वाला राजकुमार कहा जाएगा। अध्याय 11 में, यशायाह ने फिर से इस शासक के बारे में भविष्यवाणी की। उसे यशायाह 4:2 में यहोवा की डाली की तरह एक डाली कहा गया। वह यहोवा की आत्मा की मदद से शासन करेगा। यह पवित्र आत्मा का एक और नाम है। इस शासक के राज्य में जीवन बहुत अलग होगा। यह उस दुनिया जैसा नहीं होगा जिसके लोग आदी थे। पृथ्वी पर हर जगह हर कोई जान जाएगा कि परमेश्वर कौन हैं और उसकी सेवा करेंगे। कोई भी और कुछ भी किसी को या किसी चीज़ को नुकसान नहीं पहुंचाएगा। यशायाह ने इस बात का वर्णन इस प्रकार किया कि बच्चे उन जानवरों के साथ खेलेंगे जो आमतौर पर खतरनाक होते हैं। उन्हें कोई नुकसान नहीं होगा। यह उस शांति की तस्वीर थी जो यह शासक लाएगा। यहूदी इन आशा के संदेशों को मसीह के बारे में भविष्यवाणियों के रूप में समझने लगे। नए नियम के लेखकों ने उन्हें यीशु के बारे में भविष्यवाणियों के रूप में समझा। यशायाह ने उन स्तुति गीतों को लिखा जो परमेश्वर के लोग एक दिन गाएंगे। वे उन्हें तब गाएंगे जब परमेश्वर उनके खिलाफ न्याय लाना समाप्त कर देंगे। वे उन्हें तब गाएंगे जब परमेश्वर उन्हें सांत्वना देंगे। यशायाह अध्याय 40 से 66 इस सांत्वना के बारे में बात करते हैं। अध्याय 12 के गीतों में इस्राएली पहचानते हैं कि परमेश्वर उनके उद्धारकर्ता हैं। वे सभी को उनके बारे में बताते हैं। वे पृथ्वी पर सभी राष्ट्रों को परमेश्वर को जानने और सम्मान देने में मदद करते हैं। ये आनंदमय गीत परमेश्वर को इस्राएल के पवित्र जन के रूप में मनाते हैं।

यशायाह 13:1–23:18

यशायाह ने परमेश्वर से मिले कई संदेश अन्य देशों के लोगों और प्रधानों के बारे में बोले। इनमें बाबेल, अश्शूर, पलिश्ती, मोआब, सीरिया और उसकी राजधानी दमिश्क शामिल थे। इनमें उत्तरी राज्य, कूश, मिस्र, एदोम, अरब और सोर भी शामिल थे। कूश मिस्र के दक्षिण में अफ्रीका का एक राष्ट्र था। बाबेल के पश्चिम में रेगिस्तानी क्षेत्र को अरब कहा जाता था। संदेश उन चीजों के बारे में चेतावनी थे जो होने वाली थीं। इनमें से अधिकांश बातें भयानक थीं और उन राष्ट्रों के नष्ट होने का कारण बनेंगी। उनके बारे में बात करने से भविष्यवक्ता को डर, दर्द और गहरी उदासी होती थी। यह पता नहीं है कि इन राष्ट्रों के लोगों और प्रधानों को यशायाह की भविष्यवाणियों के

बारे में पता था या नहीं। लेकिन दक्षिणी राज्य के लोगों को उनके बारे में बताया गया था। यह परमेश्वर का अपने लोगों को उनके आस-पास के राष्ट्रों के बारे में सिखाने का एक तरीका था। भविष्यवाणियाँ यह दिखाती थीं कि परमेश्वर के पास उन राष्ट्रों पर अधिकार और सामर्थ थी। भविष्यवाणियाँ यह दिखाती थीं कि परमेश्वर के लोगों को उन राष्ट्रों पर भरोसा नहीं करना चाहिए कि वे उन्हें बचाएंगे। कोई भी राष्ट्र उन्हें अश्शूर और बाबेल जैसे मजबूत राष्ट्रों से नहीं बचा सकता था। संदेशों ने परमेश्वर के लोगों को दिखाया कि परमेश्वर सभी राष्ट्रों के खिलाफ न्याय लाएगा। वह उनके प्रधानों के विरुद्ध न्याय करेगा क्योंकि वे अभिमानी हैं और दूसरों को कष्ट पहुँचाते हैं। भविष्यवाणियाँ यह भी दिखाती थीं कि परमेश्वर चाहते थे कि अन्य राष्ट्र उन्हें जानें और विनम्र बनें। वह चाहते थे कि वे समझें कि वह ही प्रभु हैं जो सभी पर राज्य करते हैं। वह चाहते थे कि वे उनकी आराधना करें और दूसरों के लोगों के लिए आशीष बनें। यशायाह के संदेश इन राष्ट्रों को आमंत्रित करते थे कि वे याकूब के लोगों के परमेश्वर को अपना परमेश्वर मानें। संदेशों ने उन्हें सुरक्षा और संरक्षण के लिए परमेश्वर के पास आने के लिए आमंत्रित किया। यह यरूशलेम और दक्षिणी राज्य के लिए भी ऐसा ही करने का एक सबक था।

यशायाह 24:1–27:13

इन अध्यायों में न्याय के संदेश पूरे संसार के बारे में हैं। ये प्रलय लेखन के उदाहरण हैं। ये शक्तिशाली और डरावने चित्रों और संकेतों का उपयोग करके न्याय का वर्णन करते हैं। यशायाह के लिए इन न्याय संदेशों को साझा करना कठिन था। उन्होंने उसे कमजोर और भयानक महसूस कराया। न्याय संदेश उन लोगों के लिए बुरी खबर थी जो अभिमानी थे। वे उन लोगों के लिए बुरी खबर थी जो ऊंची दीवारों वाले शहरों पर भरोसा करते थे। यह परमेश्वर पर भरोसा करने के बजाय सरकार या सेना पर भरोसा करने की बात करने का एक तरीका था। न्याय के संदेश दुष्ट की आत्मिक शक्तियों के लिए भी बुरी खबर थी। ये दुष्ट आत्मिक प्राणी और शैतान हैं। इन अध्यायों में आशा के संदेश भी पूरे विश्व के बारे में हैं। ये संदेश बताते हैं कि परमेश्वर पूरे संसार के राजा के रूप में राज्य करेंगे। वह अभिमानी शहरों को नष्ट कर देगा। इसका मतलब है कि परमेश्वर सभी अभिमानी सरकारों और प्रधानों को नष्ट कर देगा। वह उन सरकारों और प्रधानों को नष्ट कर देगा जो शासकों के रूप में उनके उदाहरण का पालन नहीं करते हैं। यह उन लोगों के लिए बड़ी खुशी की बात है जिन्होंने उन सरकारों और प्रधानों द्वारा बुरा बर्ताव सहा है। इसके बाद, सभी लोग सच्चाई और न्याय को सीखेंगे और सही कार्य करेंगे। सभी राष्ट्र परमेश्वर का आदर करेंगे। जो लोग परमेश्वर के शत्रु थे, वे परमेश्वर के साथ शांति स्थापित कर सकेंगे। वे सुरक्षा के लिए उस पर भरोसा कर सकेंगे। परमेश्वर उन चीज़ों को रोक देंगे जो लोगों को दुखी और शर्मसार करती हैं। वह मृत्यु का नाश करेंगे और लोगों को एक बार फिर जीवन देंगे। खुशी के इस समय को एक दावत के रूप में वर्णित किया गया है जिसे परमेश्वर सभी राष्ट्रों के लिए तैयार करते हैं। वह इसे सिय्योन पहाड़ पर तैयार करते हैं, जहाँ मंदिर स्थित है। यह एक चित्रण है कि कैसे परमेश्वर इस्राएल के लोगों के माध्यम से सभी राष्ट्रों को आशीष देंगे। यह इस बात की एक तस्वीर है कि कैसे सभी राष्ट्र परमेश्वर की आराधना एक सच्चे परमेश्वर के रूप में करेंगे। ये संदेश लोगों को परमेश्वर की स्तुति के गीत गाने के लिए प्रेरित करते हैं। यहूदियों ने समझा कि यशायाह की भविष्यवाणियाँ भविष्य के एक समय के बारे में बात करती हैं। इनमें से कुछ आशा के संदेश सच हो गए जब बाबेल ने अपनी शक्ति खो दी। प्रकाशितवाक्य में यूहन्ना के कुछ दर्शन यशायाह के न्याय और आशा के संदेशों की तरह हैं। प्रकाशितवाक्य के अध्याय 19 से 22 में यह स्पष्ट किया गया है कि यशायाह के संदेश कब पूरी तरह से सच होंगे। यह तब होगा जब यीशु नई सृष्टि में राजा के रूप में पूरी तरह से शासन करेंगे।

यशायाह 28:1–39:8

इन अध्यायों में न्याय और आशा के बारे में यशायाह के और भी संदेश दर्ज़ हैं। ये न्याय संदेश उत्तरी राज्य, दक्षिणी राज्य और अन्य राष्ट्रों के खिलाफ थे। मुख्य समस्या यह थी कि परमेश्वर के लोगों में प्रभु के प्रति आदर नहीं था। वे केवल परमेश्वर की आराधना नहीं करते थे बल्कि झूठे देवताओं की भी आराधना करते थे। परमेश्वर चाहते थे कि वे उनके शिक्षक बनें, लेकिन उन्होंने उनकी शिक्षाओं को नहीं सुना। उन्होंने सीनै पहाड़ की वाचा का पालन करने के बजाय परमेश्वर के नियमों का मजाक उड़ाया। वे शांति और आराम चाहते थे लेकिन जब दुश्मनों ने उन पर हमला किया तो उन्होंने परमेश्वर से मदद नहीं मांगी। इसके बजाय, उन्होंने मिस्र जैसे अन्य राष्ट्रों पर भरोसा किया कि वे उनकी रक्षा करेंगे। इस सब के कारण परमेश्वर ने वाचा के शापों को अपने लोगों पर आने दिया। वह दूसरे राष्ट्रों का इस्तेमाल करके उनके खिलाफ़ अपना न्यायदंड लाएगा। बाद में वह उन दूसरे राष्ट्रों को उनके घमंड के लिए सज़ा देंगे। यशायाह ने परमेश्वर के लोगों को प्रभु की ओर लौटने के लिए प्रेरित किया। इसका मतलब था कि वे अपने पापों से मुड़ें और पश्चाताप करें। इसका मतलब था परमेश्वर की आज्ञा मानना और वही करना जो न्यायपूर्ण और सही है। ऐसा करने से परमेश्वर के लोगों को शांति और आराम मिलेगा। शांति और आराम आशा के संदेशों का हिस्सा थे। आशा के संदेशों ने भविष्य में एक अद्भुत समय का वर्णन किया। परमेश्वर को आदर और सम्मान मिलेगा और उसके लोग वाचा के आशीषों का आनन्द उठाएंगे। पवित्र आत्मा परमेश्वर के लोगों पर उंडेला जाएगा। इससे पता चलता है कि वे परमेश्वर के कितने करीब होंगे। परमेश्वर उनके साथ

उपस्थित होगा और हर कोई परमेश्वर की महिमा और सुंदरता देखेगा। लोगों के शरीर ठीक हो जाएंगे और मजबूत बनाए जाएंगे। वे सुरक्षित और संरक्षित होंगे। उनके पास अच्छी तरह से जीने के लिए सब कुछ होगा। वे बुद्धिमान और पवित्र लोग बनकर रहेंगे जो परमेश्वर का सम्मान करते हैं। यरूशलेम पर अश्शूर के हमले की कहानी यशायाह की भविष्यवाणियों का एक उदाहरण है। यह कहानी 2 राजा अध्याय 18 से 20 और 2 इतिहास अध्याय 32 में भी दर्ज है। अश्शूर दक्षिणी राज्य के खिलाफ न्याय लाने के लिए परमेश्वर का हथियार था। लेकिन अश्शूर के प्रधान अभिमानी थे और परमेश्वर का मज़ाक उड़ाते थे। राजा हिजकिय्याह और यरूशलेम के अगुवों ने खुद को नम्र बनाया। उन्होंने परमेश्वर से उन्हें बचाने के लिए पुकारा। परमेश्वर ने उन्हें अश्शूर सेना से बचाया। दक्षिणी राज्य में शांति और आराम था। लेकिन उस समय यशायाह के आशा भरे संदेश पूरी तरह पूरे नहीं हुए। यशायाह ने घोषणा की कि एक दिन बाबेल दक्षिणी राज्य पर कब्ज़ा कर लेगा।

यशायाह 40:1–48:22

अध्याय 39 के अंत में यशायाह ने बाबेल के बारे में एक घोषणा की। बाबेल की सत्ता दक्षिणी राज्य पर नियंत्रण कर लेगी। बाबेल की सेनाएँ दक्षिणी राज्य के कई लोगों को अपनी भूमि छोड़ने के लिए मजबूर करेंगी। उन्हें बाबुल में बंधवाई में रहने के लिए मजबूर किया जाएगा।अध्याय 40 से 48 में बाबुल में निर्वासन में रह रहे उन लोगों के लिए सांत्वना के संदेश दर्ज़ हैं। जब बाबेल ने दक्षिणी राज्य पर नियंत्रण कर लिया तो उन्हें वहां बंधवाई में रहने के लिए मजबूर किया गया था। ये संदेश कविताओं, भविष्यवाणियों और स्तुति गीतों के रूप में दर्ज किए गए थे। इन्हें अदालत में परमेश्वर और अन्य लोगों के बीच तर्क-वितर्क के रूप में भी दर्ज किया गया था। ये संदेश तीन बातों को बहुत स्पष्ट रूप से बताते हैं। ये स्पष्ट करते हैं कि परमेश्वर कौन हैं, झूठे देवता क्या हैं, और परमेश्वर के लोग कौन थे। सबसे पहले, परमेश्वर एकमात्र सच्चा परमेश्वर है जिसने सब कुछ बनाया और हमेशा से अस्तित्व में है। कोई भी और कुछ भी परमेश्वर के बराबर नहीं है। दूसरा, झूठे देवता वे वस्तुएं हैं जिन्हें लोगों ने बनाया है और उनमें बिल्कुल भी शक्ति नहीं है। झूठे देवता न तो लोगों को यह बता सकते हैं कि भविष्य में क्या होने वाला है और न ही उन्हें उनकी परेशानियों से बचा सकते हैं। तीसरा, याकूब के परिवार की वंशावली के लोग परमेश्वर के सेवक थे। परमेश्वर ने उन्हें दूसरों के सामने यह गवाही देने के लिए चुना कि वह परमेश्वर है। याकूब के परिवार की वंशावली के लिए परमेश्वर का प्रेम बहुत गहरा और कोमल था। परमेश्वर ने स्वयं को एक चरवाहे के रूप में वर्णित किया जो अपने लोगों को मेमनों की तरह अपने हृदय के पास रखता है। लेकिन उसके लोगों ने शिकायत की कि परमेश्वर ने उनके साथ बुरा व्यवहार किया है। उनका मानना था कि बंधवाई ने दिखाया कि परमेश्वर उनकी परवाह नहीं करता। परमेश्वर ने समझाया कि वे अपने पापों के कारण बंधवाई में गए थे। लेकिन परमेश्वर ने एक नई बात की घोषणा की जो वे करने वाले थे। वह अपने लोगों को बाबेल से यहूदा वापस लाएगे। इस कार्य को पूरा करने के लिए वह फारस के राजा का उपयोग करेंगे, उस राजा का नाम कुस्रू होगा। अध्याय 42 में, परमेश्वर ने एक व्यक्ति के बारे में बात की जिसे "परमेश्वर के सेवक" कहा गया। कई मायनों में यह सेवक वही है जो इस्राएल के लोगों को होना चाहिए था। उन्हें परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करके पवित्र और न्यायपूर्ण तरीके से जीवन जीना था। उन्हें अन्य राष्ट्रों को परमेश्वर के बारे में सिखाना था और यह बताना था कि उसकी आराधना और आदर कैसे करें। इस तरह वे अन्यजातियों के लिए ज्योति होंगे। नए नियम के लेखकों ने दिखाया कि यीशु ने भी इन तरीकों से परमेश्वर की सेवा की (मत्ती 12:15–21) । उन्होंने समझा कि इस सेवक के बारे में लिखी गई कविता वास्तव में यीशु के बारे में एक भविष्यवाणी थी।

यशायाह 49:1–53:12

यशायाह 49:1–6; 50:4–9 और 52:13 – 53:12 के संदेशों में परमेश्वर के सेवक के बारे में अधिक बात की गई है। यह निश्चित रूप से ज्ञात नहीं है कि इन भविष्यवाणियों के समय यह सेवक कौन था। यह भविष्यवक्ता यशायाह हो सकता है। यह कोई ऐसा व्यक्ति हो सकता है जिसने बंधवाई के दौरान परमेश्वर के लोगों की मदद की। परमेश्वर ने सेवक को अपने काम के लिए अलग किया। वह काम याकूब के परिवार को परमेश्वर के पास वापस लाना था। इसका मतलब था कि सेवक परमेश्वर के लोगों को उस तरह से जीने में मदद करेगा जैसा परमेश्वर चाहते थे। वे वास्तव में परमेश्वर के लोग बनकर रहेंगे और उसके प्रति विश्वासयोग्य रहेंगे। इसका यह भी मतलब था कि सेवक उन्हें बंधवाई से उनके देश में वापस लाने में मदद करेगा। सेवक का काम अन्यजातियों के लिए प्रकाश बनना भी था। इस तरह पृथ्वी पर हर कोई परमेश्वर को जान सकेंगे। हर कोई परमेश्वर पर अपने उद्धारकर्ता के रूप में विश्वास करेंगे। सेवक ने अपना काम हिंसा का उपयोग करके नहीं किया। वह सज्जन था और उसने वे शब्द बोले जो परमेश्वर ने उसे सिखाए थे। उसके शब्द तलवार की तरह थे। उसके साथ बुरा व्यवहार किया गया। वह पीड़ित हुआ और परमेश्वर के लोगों के पापों के कारण मारा गया। वह इसके लिए तैयार था, भले ही उसने कुछ भी गलत नहीं किया था। इस तरह वह परमेश्वर के लोगों के लिए पाप बलि बन गया। इस तरह का दुख उस स्वरूप से अलग है जिसे अय्यूब के दोस्तों ने देखा था। उन्होंने देखा था कि जो लोग मूर्खतापूर्ण और पापपूर्ण काम करते थे, उन्हें पीड़ित होना पड़ता था। परमेश्वर का सेवक पीड़ित हो रहा था, भले ही उसने पापपूर्ण और मूर्खतापूर्ण काम नहीं किए थे। वह परमेश्वर के लोगों की मदद करने के लिए पीड़ित हो रहा था। परमेश्वर के सेवक ने दिखाया

कि दूसरों के लिए पीड़ित होना उनके उद्धार का कारण बन सकता है। इससे यीशु के अनुयायियों को उस काम को समझने में मदद मिली जो यीशु ने क्रूस पर मरते समय किया था। नये नियम के कई लेखकों ने यीशु का वर्णन करने के लिए परमेश्वर के सेवक के बारे में इन अध्यायों के शब्दों का इस्तेमाल किया।

यशायाह 54:1–66:24

यशायाह के अंतिम अध्यायों में वर्णन किया गया कि उन लोगों के साथ क्या होगा जिन्होंने वे काम किए जिन्हें परमेश्वर नफरत करते थे। परमेश्वर को नफरत थी जब उनके लोग केवल दिखावे के लिए आराधना और आज्ञा पालन करते थे, जबकि असल में वे हत्या करते थे। वे झूठ बोलते थे और जरूरतमंद लोगों के साथ बुरा बर्ताव करते थे। परमेश्वर को बुरे योजनाएं बनाने और झूठे देवताओं की आराधना करने से भी नफरत थी। परमेश्वर चाहते थे कि उनके लोग पाप करना छोड़ दें और उनकी आज्ञा का पालन करें । परमेश्वर ने अपनी इस इच्छा का वर्णन ऐसे किया जैसे वह एक हठीली राष्ट्र का स्वागत करने के लिए अपने हाथ फैला रहा हो। परमेश्वर ने अपने लोगों के पापों के लिए न्याय लाने का वादा किया। वे पीड़ित होंगे और शर्मिंदा होंगे। उसने उन्हें बदलने का निमंत्रण भी दिया ताकि वे जीवित रह सकें। उन्होंने इसे बाज़ार में उनसे खाने-पीने का सामान खरीदने जैसा बताया। लेकिन परमेश्वर ने खाने-पीने की चीज़ें मुफ़्त में दीं। इससे पता चलता है कि परमेश्वर कितनी गहराई से चाहते थे कि वे उसकी ओर लौटें और क्षमा पाएँ। यशायाह के आखिरी अध्यायों में यह भी बताया गया है कि परमेश्वर की आज्ञा मानने वाले लोगों का क्या होगा। जो लोग आज्ञा का पालन करते थे वे विनम्र थे, परमेश्वर पर भरोसा करते थे और उनसे सिखना चाहते थे। वे धन्य होंगे और परमेश्वर के घर में उनका स्वागत किया जाएगा। यह मंदिर का दूसरा नाम था। परमेश्वर ने ऐसे किसी भी व्यक्ति के साथ रहने का वादा किया जो अपने पापों से दूर हो जाता है। यह वादा याकूब की वंशावली के लोगों, बाहरी लोगों और सभी राष्ट्रों के लोगों पर लागू होता है। वे परमेश्वर के पवित्र पर्वत सिय्योन का अधिकार प्राप्त करेंगे। इसका मतलब था कि वे उस भूमि में रह सकते थे जहां परमेश्वर राजा के रूप में शासन करते थे। परमेश्वर ने यरूशलेम के प्रकाश, चमक और नए दिन का वर्णन किया। वह उस समय से अधिक कुछ बात कर रहे थे जब लोग बाबुल से यरूशलेम लौटे थे। परमेश्वर ने एक पूरी तरह से नए काम का वर्णन किया जो वे करेंगे। वे नए आकाश और एक नई पृथ्वी बनाएंगे। नए आकाश और नई पृथ्वी में, हर कोई परमेश्वर का सम्मान करेगा। इसका वर्णन इस प्रकार किया गया था कि दुनिया भर से लोग यरूशलेम आएँगे। वे वहां परमेश्वर की आराधना करेंगे। परमेश्वर द्वारा वर्णित यह यरूशलेम खुशी से भरा होगा। वहाँ कोई रोना-धोना नहीं होगा। कोई भी किसी को नुकसान नहीं पहुंचाएगा या कुछ भी नष्ट नहीं करेगा। सभी लोग सही और न्यायपूर्ण काम करेंगे। परमेश्वर यह नया काम तब करेंगे जब सही समय होगा। कई साल बाद यीशु ने कहा कि परमेश्वर उनके माध्यम से वह नया काम शुरू कर रहे है। यीशु ने पृथ्वी पर किए जा रहे काम का वर्णन करने के लिए यशायाह 61:1–2 के शब्दों का उपयोग किया (लूका 4:14–21)। प्रकाशितवाक्य में, यूहन्ना ने भी नए आकाश और नई पृथ्वी का वर्णन किया। जिस शहर में परमेश्वर ने राजा के रूप में हमेशा के लिए शासन किया, उसे नया यरूशलेम कहा गया (प्रकाशितवाक्य 21:1–5)।